विवाह में विलम्ब या अविवाहित

- अनुराधा मित्तल

किसी ने सच ही कहा है कि ***'जोड़ियां स्वर्ग में तय होती हैं'***। लेकिन एक विद्वान ज्योतिष ईश्वरीय कृपा से जन्मपत्री के माध्यम से विवाह होगा या नहीं अथवा शीघ्र या देरी से होगा तथा विवाह की सफलता और असफलता का संकेत देने में सक्षम होता है।

नवग्रहों में गुरु और शनि को मंदगति ग्रह कहा है। गुरु एक नैसर्गिक शुभ ग्रह होने से जीवन में शुभता देता है तो शनि नैसर्गिक अशुभ ग्रह होकर बाधा उत्पन्न करता है। हमारे वेदों में भी शनि की शुभता पर सन्देह करते हुआ कहा है कि **"शं नो देवीरभीष्हये आपो भवन्तु पीतये शं योरभि स्त्रवन्तु नः",** शनि का गोचर एक राशि में लगभग ढाई वर्ष और गुरु का एक वर्ष रहता है। विवाह से सम्बन्धित भाव, भावेश और कारक यदि शनि या गुरु की राशि में हों तो विवाह में देरी करेगा और शनि विवाह में देरी या अपने से अधिक आयु का जीवनसाथी दे सकता है। सप्तम भाव में स्थिर राशि विवाह में देरी दे सकती है। इसी प्रकार वक्री ग्रह का विवाह के भाव, भावेश, कारक से सम्बन्ध बनने से भी विवाह में देरी व नकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि शनि ही क्यों विवाह में बाधा डालता है और भी तो पापी ग्रह हैं उनका इतना प्रभाव क्यों नहीं होता। इसके भी कई कारण हैं, शनि मंदगति ग्रह होने के साथ एकाकी प्रकृति का ग्रह है और शनि की सूर्य, चन्द्रमा, मंगल से युति अधिक अनिष्टप्रद हो जाता है। शनि के वक्री होकर द्वितीय-पंचम-सप्तम-एकादश (2,5,7,11) भावों को प्रभावित करने से भी शादी की सम्भावना कम हो जाती है।

शनि को हम देरी, उदासीनता, बाधा और नकारात्मकता आदि प्रकृति से परिभाषित कर सकते हैं। शास्त्रों में भी कहा है कि पंचमस्थ शनि की विवाह के भाव सप्तम, एकादश तथा द्वितीय भाव पर दृष्टि विवाह में देरी कर सकती है और यदि अधिक पाप प्रभाव तो अविवाहित जीवन या होकर टूट जाए, ऐसे

परिणाम भी देखे गए हैं।

सूर्य-शनि पिता पुत्र होने के बावजूद नैसर्गिक शत्रु हैं। सूर्य, शनि की उच्च की राशि में नीच का होता है। सूर्य अग्नि है तो शनि एकदम ठण्डा। सूर्य-शनि का अस्त-उदय भी विपरीत दिशा (पश्चिम-पूर्व तथा पूर्व-पश्चिम में) में होता है। अतः सूर्य व शनि का विवाह सम्बन्धित भाव, भावेश, कारक ग्रहों से संबंध नकारात्मक परिणाम देते हैं। लग्न, सप्तम भाव, सप्तमेश या विवाह का कारक शुक्र चन्द्र, शनि, सूर्य से प्रभावित होंगे अविवाहित योग दे सकते हैं। लेकिन इस योग पर यदि गुरु की दृष्टि अथवा युति हो जाए तो बाधाओं के बाद देरी से विवाह हो सकता है।

बृहत पराशर होराशास्त्र के अनुसार, यदि अष्टम भाव से सातवें शुक्र और अष्टमेश मंगल से युक्त हो तो बाइसवें या सत्ताइसवें वर्ष में विवाह होगा (श्लोक-30)।

यदि लग्नेश सप्तमेश के नवांश में हो और सप्तमेश द्वादशस्थ हो तो तेइसवें या छब्बीसवें वर्ष में विवाह होगा (श्लोक-31)।

यदि अष्टमेश सप्तम भाव में लग्न के नवांश में शुक्र से युत हो तो पच्चीसवें या तैंतीसवें वर्ष में विवाह होगा (श्लोक-32)।

यदि शुक्र नवम भाव से नवें में(पंचम भाव) हो और उन दोनों में से एक में राहु हो तो इकत्तीसवें या तैंतीसवें वर्ष में विवाह होगा (श्लोक-33)।

इन शास्त्रों की रचनाकाल में बाइसवें या तेइसवें वर्ष की आयु को विवाह हेतु बहुत अधिक माना जाता था, अतः देश-काल-पात्र को ध्यान में रखना आवश्यक होगा।

यदि शुक्र नवम भाव से सातवें हो और शुक्र से सातवें में सप्तमेश हो तो तीसवें या सत्ताइसवें वर्ष में विवाह होता है (श्लोक-34)।

फलदीपिका के अनुसार, स्त्री की कुण्डली में सूर्य-मंगल तथा पुरूष की कुण्डली में चन्द्रमा-शुक्र, पापी ग्रहों के साथ हो तब भी विवाह देरी से होता है।

भावचन्द्रिका के अनुसार यदि शुक्र, सप्तमेश, लग्न/लग्नेश यह सभी स्थिर राशि में हों और बलहीन चन्द्रमा चर राशि में हो तो विवाह तीसवें वर्ष में होता है और यदि शनि भी युति कर ले तो विवाह पचासवें वर्ष में होता

है और यदि गुलिक का भी संबंध बन जाए तो विवाह साठ वर्ष में होता है।

सूत्र

- शनि-चन्द्र, चन्द्र-शुक्र अथवा शनि-चन्द्र-शुक्र युति, शनि-शुक्र युति।

- सप्तमेश, शुक्र, लग्न तथा चन्द्रमा का पाप ग्रहों से निकटतम अंशों पर पीड़ित होना।

- बुध व शुक्र की निकटतम अंशों पर युति।

- सप्तम भाव/सप्तमेश, लग्न/लग्नेश, शुक्र, गुरु तथा चन्द्रमा का पापकर्तरी में होना।

- सप्तमेश स्व-नक्षत्र में हो।

- दाराकारक तथा ज्ञातिकारक की 1^0 के भीतर अंशात्मक युति।

- सप्तमेश, शुक्र तथा गुरु का राहु-केतु अक्ष में होना।

- मांगल्य स्थान

- पंचमस्थ शनि की सप्तम-एकादश-द्वितीय भाव पर दृष्टि विवाह में देरी, विवाह न होना तथा उदासीनता देता है।

- स्त्री की कुंडली में एकादशस्थ शनि की मांगल्य स्थान (लग्न-पंचम-अष्टम) पर दृष्टि विवाह न होने के स्थान पर देरी को दर्शाती है क्योंकि शनि एक मंदगति ग्रह होकर अवरोध के अष्टम भाव (स्त्री के लिए मांगल्य स्थान होने के साथ-साथ अवरोध का भी है) को दृष्टि देता है।

आइए अब कुछ कुंडलियों के माध्यम से इन सूत्रों का विश्लेषण करते हैं:-

उदाहरण-1 (विवाह में विलम्ब)

विवाह की तिथि - 20 अप्रैल, 1987

वक्री ग्रह यदि सप्तमेश, शुक्र या गुरु है तो विवाह में देरी करा सकता है। यहां सप्तमेश शनि छठे भाव में होकर वक्री है।

अंतिम अंशों पर स्थित लग्न विवाह में देरी का द्योतक है। शनि का लग्न या लग्न के अंशों (भाव-मध्य) पर स्थित होना विवाह में देरी दे सकता है।

उदाहरण-1 (पति) 19-4-1958/11:43/बरेली

जन्मकुंडली

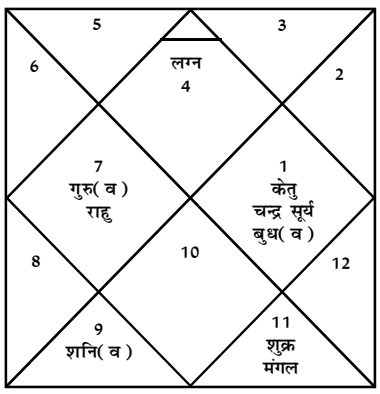

नवांश

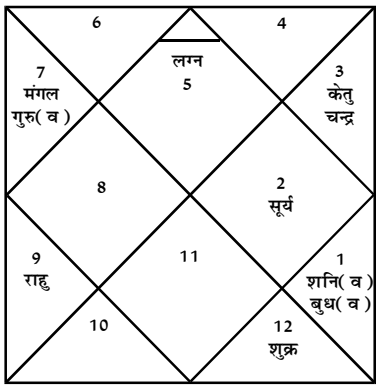

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$05^0\,39'$	$05^0\,24'$	$06^0\,41'$	$00^0\,56'$	$01^0\,12'$	$03^0\,15'$	$19^0\,21'$	$02^0\,15'$	$07^0\,58'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	शुक्र	चन्द्र	सूर्य	गुरु	शनि	बुध	मंगल	

कर्क राशिस्थ शनि भी विवाह में बाधा उत्पन्न करता है।

सूर्य-शनि द्वारा यदि लग्न, सप्तम भाव/सप्तमेश, द्वितीयेश, मंगल अथवा शुक्र पापकर्तरी योग में हो, तो भी विवाह में विलम्ब होता है। सूर्य-शनि का एक राशि में होना भी विवाह प्रतिबन्धक योग होता है।

शुक्र, चन्द्रमा व सूर्य का शत्रु है अत: इनकी समान अंशों पर एक ही राशि में युति अनिष्टकारी है जिससे वैवाहिक सुख अवरुद्ध होता है अथवा विलम्ब से विवाह होता है। शुक्र नीच का हो और पापप्रभाव में भी हो तो विवाह में देरी होती है।

शुक्र अष्टम भाव में मंगल के साथ है और वक्री गुरु तथा वक्री शनि से दृष्ट है। मंगल-शनि का स्थान-दृष्टि-युति सम्बन्ध विवाह में विलम्बकारक है और यदि राहु-केतु का प्रभाव भी पापा में वृद्धि करता है तो अधिक विलम्ब की संभावना होती है।

सप्तम भाव में ग्रहयुद्ध की स्थिति विवाह में अशुद्धि देती है। सप्तम भाव पापकर्तरी में है।

महिला की कुंडली में दाराकारक मंगल और ज्ञातिकारक बुध समान

उदाहरण-1 (पत्नी) 05-11-1961/16:02/पिलखुआ

जन्मकुंडली

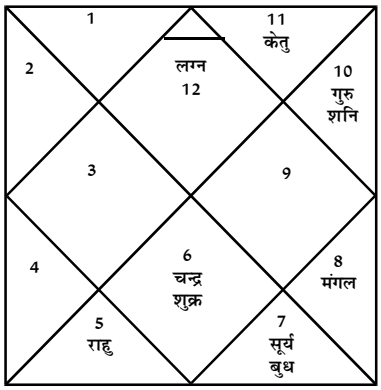

नवांश

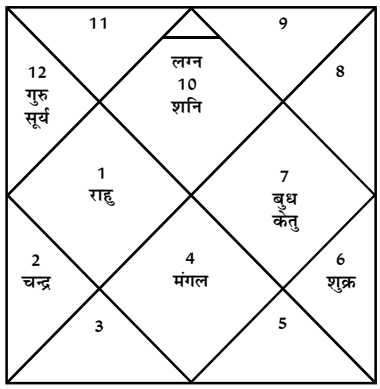

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$20^0\,59'$	$19^0\,27'$	$14^0\,43'$	$00^0\,38'$	$00^0\,52'$	$06^0\,50'$	$29^0\,26'$	$01^0\,07'$	$00^0\,39'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	गुरु	शनि	बुध	मंगल	

अंशों पर हैं। दोनों राहु-केतु के अंशों पर भी हैं। शनि भी निकटतम अंशों पर स्थित है।

सप्तम भाव, शुक्र और चन्द्रमा सभी पापकर्तरी में हैं।

शनि की एकादश भाव से पंचम, लग्न तथा अष्टम भाव पर दृष्टि है जो स्त्री की कुंडली का मांगल्य भाव है और साथ ही, अवरोध का भी कारक है। शनि की अष्टमस्थ सप्तमेश पर दृष्टि विवाह में विलम्ब देने में सक्षम है।

लग्नेश गुरु एकादश भाव में नीच के होकर शनि के साथ स्थित है और वहां से सप्तम भाव को प्रभावित करके विवाह में देरी को दर्शा रहे हैं। सप्तमेश और अष्टमेश का राशि परिवर्तन भी है।

उदाहरण-2 (विवाह में विलम्ब व तनाव)

विवाह - 28 नवम्बर, 2010

विवाह के दो माह बाद ही झगड़े के कारण 2 फरवरी, 2011 को घर छोड़कर चली गई। अदालत में याचिका दायर है परन्तु पति तलाक नहीं

उदाहरण-2 (पुरुष) 16-11-1978/14:01/मोदीनगर(उ.प्र.)

जन्मकुंडली **नवांश**

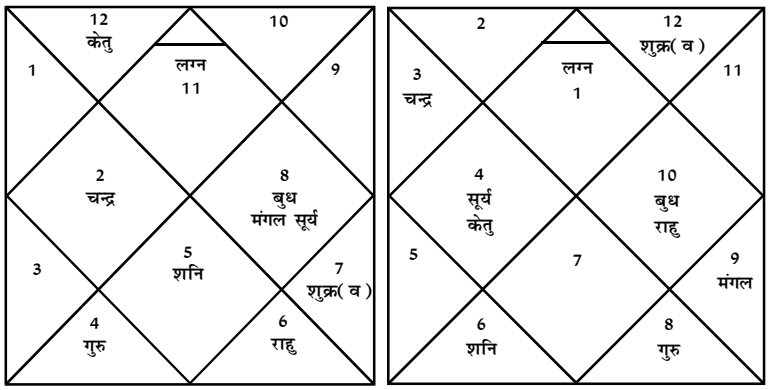

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$20^0\,54'$	$00^0\,03'$	$17^0\,54'$	$16^0\,48'$	$22^0\,29'$	$15^0\,21'$	$16^0\,47'$	$19^0\,02'$	$01^0\,26'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	बुध	शनि	चन्द्र	मंगल	शुक्र	गुरु	सूर्य	

चाहता है।

शनि की सप्तम भाव में स्थिति विवाह में देरी देने में सक्षम है। शनि लग्न तथा चन्द्रमा के समीपतम अंशों पर स्थित है। शनि सप्तम भाव में सूर्य की राशि में है। शनि का सूर्य या चन्द्रमा से अथवा लग्न या सप्तम भाव से संबंध विवाह में अवरोध देने में सक्षम है।

कुंडली में विवाह का कारक शुक्र भी वक्रीय है तथा मंगल से समान अंशों पर स्थित है।

शनि चन्द्रमा व शुक्र के समीपतम अंशों पर होने के साथ दोनों से दृष्टि संबंध भी बनाए हुए है। षष्ठस्थ गुरु की सप्तमेश सूर्य तथा पंचमेश बुध पर दृष्टि है।

सप्तमेश सूर्य राहु-केतु से निकटतम अंशों पर स्थित है।

नवांश में भी कारक शुक्र द्वादशस्थ हैं और शनि व मंगल से पापदृष्ट हैं। अष्टमस्थ गुरु की भी द्वादशस्थ शुक्र पर दृष्टि है।

इस प्रकार से जन्मकुंडली तथा नवांश दोनों में कारक शुक्र व सप्तमेश पाप प्रभाव में हैं। शनि की सप्तम भाव में स्थिति ने विवाह में देरी के साथ

वैवाहिक जीवन को तनावग्रस्त भी कर दिया।

उदाहरण-3 (विवाह में विलम्ब)

सप्तमेश बुध नीच के शनि के साथ पंचम भाव में स्थित है और शनि वहाँ से एकादश भाव (इच्छापूर्ति) तथा अपने द्वितीय भाव को भी दृष्टि दे रहा है। द्वितीय, पंचम, सप्तम व एकादश ये सभी विवाह से संबंधित भाव शनि के नीचत्व से प्रभावित हैं। चन्द्रमा भी नीच का होकर द्वादश में स्थित है और द्वादशेश मंगल से भी दृष्ट हैं।

नीच का शनि पंचम से सप्तमस्थ शुक्र, एकादशस्थ बृहस्पति को अपनी दृष्टि दे रहे हैं। ये दोनों ग्रह विवाह के कारक ग्रह होकर नीच के शनि से पीड़ित हैं।

सप्तमेश बुध का निकटतम अंशों पर नीच के शनि के साथ युति है। शनि व चन्द्रमा, शुक्र व गुरु तथा सप्तमेश विवाह में देरी या अविवाहित होने के प्रमुख कारण होते हैं। यहां ये सभी ग्रह शनि व मंगल के पाप प्रभाव में हैं

उदाहरण-3 (पुरुष) 22-05-1970/21:50/दिल्ली

जन्मकुंडली

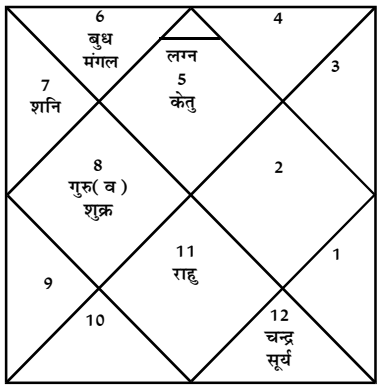

नवांश

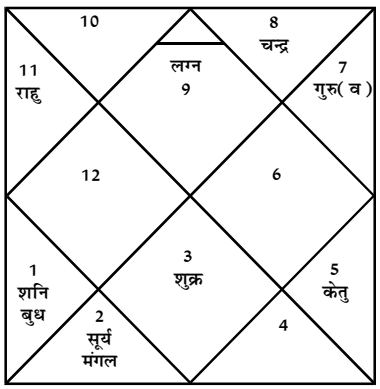

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$14^0\,23'$	$07^0\,42'$	$27^0\,43'$	$29^0\,30'$	$19^0\,45'$	$04^0\,05'$	$06^0\,39'$	$21^0\,11'$	$14^0\,25'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	मंगल	चन्द्र	शनि	बुध	सूर्य	शुक्र	गुरु	

तथा शुक्र, बृहस्पति व सप्तम भाव राहु से दृष्ट है। राहु का राशीश भी शनि ही है।

वक्री गुरु की पंचम तथा सप्तम भाव पर दृष्टि है। दाराकारक गुरु तथा ज्ञातिकारक शुक्र में अंशात्मक निकटता है।

उदाहरण-4 (अविवाहित) अटल बिहारी वाजपेयी

चन्द्रमा लग्न में नीच का होकर स्थित है और वहां से उसकी सप्तम भाव पर भी दृष्टि है। लग्न में शुक्र सप्तमेश होकर स्थित है और अपने सप्तम भाव को शुभ दृष्टि दे रहा है। चन्द्र-शुक्र की लग्न में युति ने वाजपेयी जी को कविताएं लिखने की रूचि दी।

लग्न तथा चन्द्रमा राहु-केतु से निकटतम अंशों पर हैं।

सप्तमेश शुक्र जो विवाह का कारक भी है और षष्ठेश मंगल का सूर्य से अंशात्मक संबंध ने भी विवाह में अवरोध दिया।

पृथकतावादी ग्रह शनि द्वादश भाव से कुटम्ब के द्वितीय भाव को अपनी पाप दृष्टि से प्रभावित कर रहे हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी:25-12-1924/05:45/ग्वालियर(म.प्र.)

जन्मकुंडली

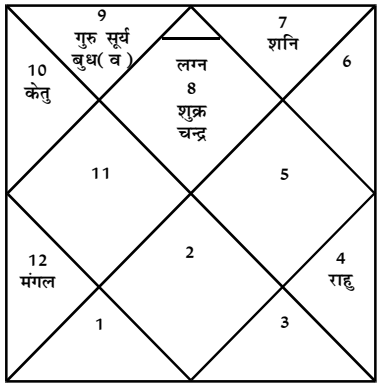

नवांश

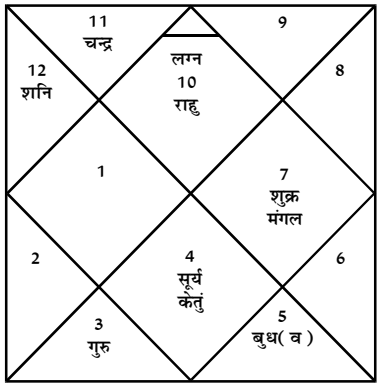

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
21^0 50'	10^0 08'	23^0 46'	10^0 32'	15^0 41'	08^0 44'	11^0 08'	18^0 39'	21^0 36'
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	चन्द्र	शनि	बुध	शुक्र	मंगल	सूर्य	गुरु	

कुटुम्ब भाव में गृहस्थ सुख का कारक गुरु स्थित है लेकिन शनि से दृष्ट है।

ज्ञातिकारक सूर्य और दाराकारक गुरु की कुटुम्ब भाव में समीपतम अंशों पर युति है और वक्री अष्टमेश बुध के साथ स्थित है।

आत्मकारक चन्द्रमा भी लग्न में नीच का होकर सप्तम भाव/सप्तमेश से संबंध बनाए हुए है।

नवांश में, लग्न और सप्तम भाव दोनों राहु-केतु व सूर्य के पापप्रभाव में हैं। शनि की तृतीय भाव से पंचम संतान भाव पर दृष्टि है।

विवाह का कारक शुक्र भी मंगल से पीड़ित है। लग्न, कारक शुक्र और गुरु सभी पापाक्रांत हैं जिससे विवाह की दशा आने पर भी इनका फलीभूत नहीं हुआ।

उदाहरण-5 (अविवाहित)

लग्नेश गुरु तथा मंगल में अंशात्मक समानता है। लग्न मंगल, सूर्य व वक्रीय बुध से घिरा हुआ है। विवाह का कारक शुक्र राहु-केतु परिधि में है

महिला (उदा.5) 06-4-1979/05:45/देहरादून

जन्मकुंडली

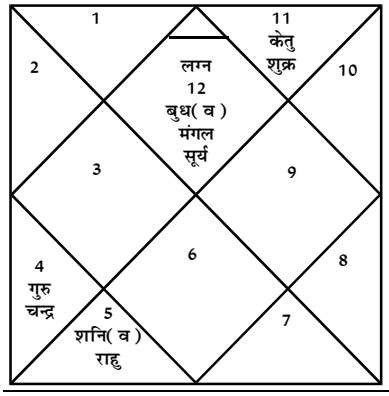

नवांश

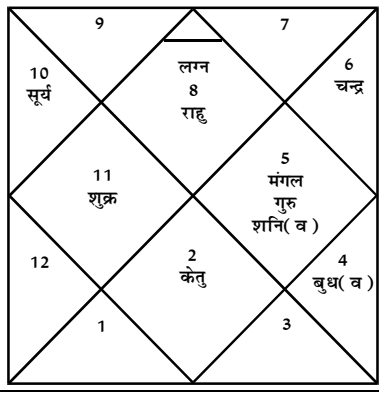

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$14^0\,44'$	$22^0\,02'$	$09^0\,32'$	$05^0\,38'$	$02^0\,13'$	$05^0\,37'$	$15^0\,50'$	$14^0\,27'$	$23^0\,37'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	सूर्य	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरु	बुध	

और षष्ठस्थ वक्री शनि से दृष्ट है। शनि और शुक्र में भी 1^0 की अंशात्मक निकटता है।

फलदीपिका के अनुसार, यदि चन्द्रमा और शुक्र पापी ग्रहों के प्रभाव में हो तो विवाह में विलम्ब होता है।

ज्ञातिकारक गुरु और दाराकारक बुध में भी अंशात्मक निकटता है। आत्मकारक सूर्य राहु-केतु से लगभग समान अंशों पर स्थित है।

सप्तमेश बुध वक्री तथा नीच का होकर लग्न में स्थित है

नवांश में भी लग्न व सप्तम भाव राहु-केतु अक्ष में है।

मार्च 2012 में सप्तमेश के प्रत्यन्तर में विवाह होने की संभावना है।

उदाहरण-6 (अविवाहित)

वक्री शनि लग्न में राहु-केतु अक्ष में है और वहां से सप्तम भाव के साथ

महिला (उदा.6) 22-10-1968/17:10/हापुड़

जन्मकुंडली **नवांश**

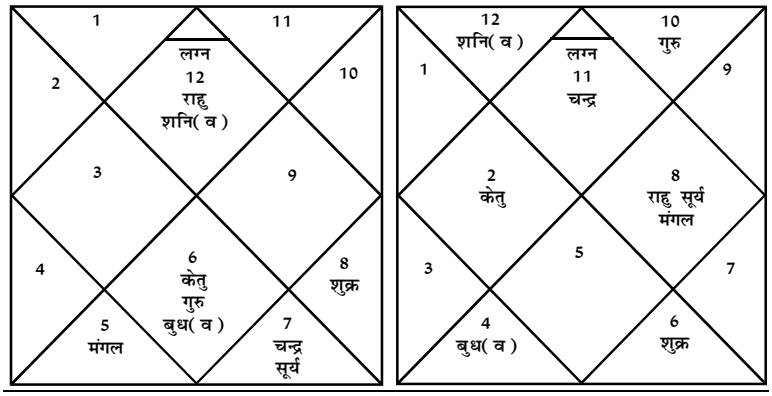

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$26^0\,01'$	$05^0\,42'$	$13^0\,32'$	$25^0\,41'$	$22^0\,42'$	$02^0\,06'$	$08^0\,00'$	$28^0\,06'$	$16^0\,10'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	शनि	मंगल	बुध	चन्द्र	शुक्र	सूर्य	गुरु	

सप्तमेश बुध को भी प्रभावित कर रहा है।

शनि लग्न से निकटतम अंशों पर स्थित है।

सप्तमेश बुध वक्री है। सप्तमेश बुध राहु-केतु अक्ष में पीड़ित है।

ज्ञातिकारक तथा दाराकारक में अंशात्मक निकटता है।

गुरु, सप्तम भाव तथा सप्तमेश सभी पापकर्तरी में हैं।

नवांश में भी शुक्र नीच का होकर अष्टमस्थ है तथा वक्री शनि से दृष्ट है।

उदाहरण-7 (विवाह में विलम्ब)

जातिका का रिश्ता दो बार टूट गया था। दूसरी बार जनवरी 2012 में टूटा था और अभी तक कोई रिश्ता नहीं हुआ है।

दाराकारक सूर्य और ज्ञातिकारक शनि में अंशात्मक निकटता है। गुरु अस्त है और शुक्र राहु-केतु अक्ष में है।

महिला (उदा.7) 23-09-1980/23:00/हापुड़

जन्मकुंडली

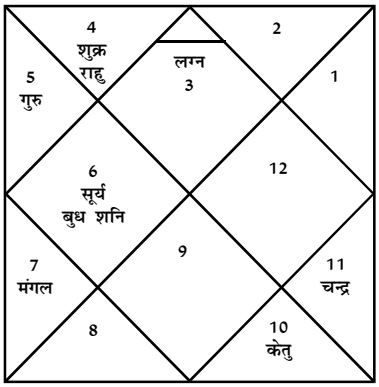

नवांश

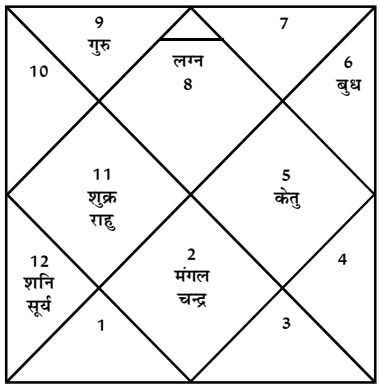

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$03^0\,24'$	$07^0\,14'$	$26^0\,14'$	$23^0\,27'$	$27^0\,41'$	$29^0\,24'$	$23^0\,42'$	$06^0\,41'$	$26^0\,01'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	गुरु	बुध	चन्द्र	शुक्र	मंगल	सूर्य	शनि	

बुध/शुक्र में रिश्ता टूटा था। शुक्र तथा राहु-केतु, तीनों लग्नेश बुध के नक्षत्र में हैं। गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्रमा तथा मंगल सभी राहु-केतु से निकटतम अंशों पर स्थित हैं।

शनि लग्न व लग्नेश दोनों को प्रभावित कर रहा है।

नवांश में शनि की सप्तम भाव और चन्द्रमा पर दृष्टि है परंतु अस्त होने के कारण रिश्ता तोड़ दिया और विवाह में देरी भी की।

सप्तमेश और लग्नेश दोनों पापकर्तरी में हैं।

उदाहरण-8 (विवाह में विलम्ब)

शुक्र सप्तमेश होकर अष्टम भाव में स्थित है। शुक्र लग्न से समान अंशों पर है।

शुक्र पर राश्यांत में स्थित चन्द्रमा की द्वितीय भाव से दृष्टि हैं।

शनि की एकादश भाव से लग्न, पंचम तथा अष्टम (मांगल्य भाव) पर दृष्टि है।

महिला (उदा.8) 23-08-1980/13:55/दिल्ली

जन्मकुंडली **नवांश**

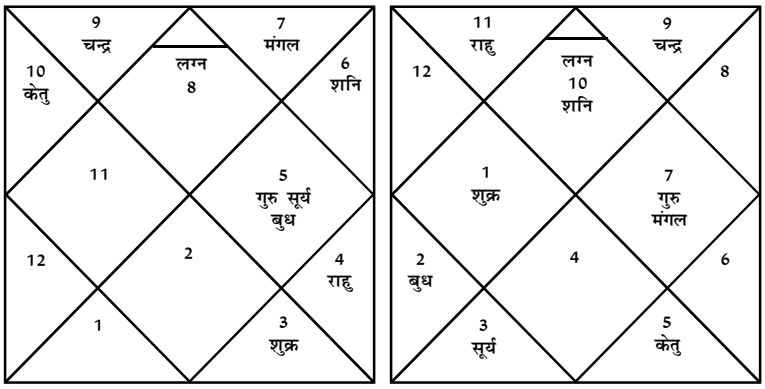

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$20^0\,00'$	$06^0\,46'$	$29^0\,25'$	$02^0\,37'$	$03^0\,33'$	$22^0\,38'$	$20^0\,59'$	$02^0\,53'$	$26^0\,38'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	चन्द्र	गुरु	शुक्र	सूर्य	बुध	शनि	मंगल	

अष्टमेश बुध लग्नेश से निकटतम अंशों पर है।

ज्ञातिकारक शनि और दाराकारक मंगल में अंशात्मक समानता है।

बड़े भाई विवाह के लिए तैयार नहीं थे – कारक मंगल द्वादश भाव से सप्तम को प्रभावित कर रहा है और शनि भी बड़े भाई का प्रतिनिधित्व करने वाले एकादश भाव में स्थित हैं और वहां से सप्तमेश शुक्र को देखते हैं।

अब घरवाले रजामन्द हो गए हैं और 15 अप्रैल, 2012 को इनका विवाह है।

उदाहरण-9 (विवाह में विलम्ब)

दाराकारक सूर्य और ज्ञातिकारक मंगल समान अंशों पर स्थित हैं और इन दोनों की शनि से भी अंशात्मक निकटता है।

द्वितीयस्थ शनि की चतुर्थ, एकादश और अष्टम भाव पर दृष्टि है जो व्यसन भी देता है।

पंचम तथा एकादश भाव राहु-केतु अक्ष में है।

उदाहरण-9: 25-10-1975/20:59:14/हापुड़

जन्मकुंडली

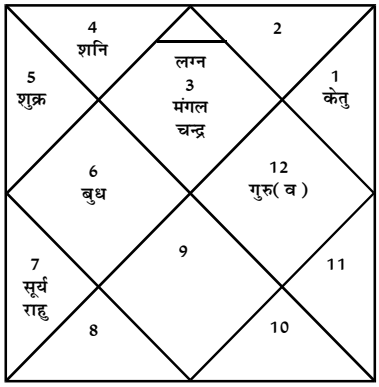

नवांश

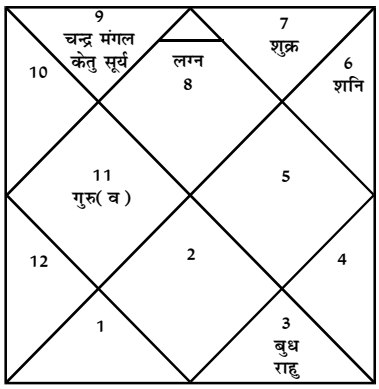

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$03^0\,55'$	$08^0\,04'$	$10^0\,00'$	$08^0\,10'$	$19^0\,48'$	$24^0\,32'$	$22^0\,07'$	$09^0\,04'$	$28^0\,10'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	मंगल	सूर्य	

उदाहरण-10: 28-09-1981/16:50/हापुड़

जन्मकुंडली **नवांश**

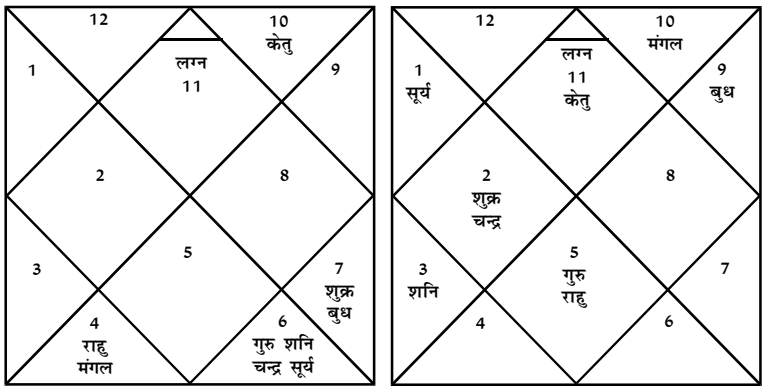

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$15^0\,08'$	$11^0\,38'$	$15^0\,06'$	$22^0\,52'$	$07^0\,09'$	$23^0\,45'$	$24^0\,24'$	$18^0\,17'$	$05^0\,53'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	शुक्र	गुरु	मंगल	शनि	चन्द्र	सूर्य	बुध	

सप्तमेश गुरु भी वक्री है।

नवांश में, शनि का एकादश भाव में होना इच्छापूर्त्ति में बाधा को दर्शाता है।

विवाह नहीं किया है परंतु संबंध बना हुआ है।

उदाहरण-10 (अविवाहित)

शनि तथा चन्द्रमा अष्टम भाव में हैं और अस्त हैं।

सप्तम भाव पापकर्तरी में है।

नवांश में शनि पंचम भाव से सप्तम भाव को पीड़ित कर रहा हे।

उदाहरण-11 (विवाह में विलम्ब)

एक रिश्ता टूटने के बाद 2009 में विवाह हो गया।

सप्तमेश शनि वक्री है। शनि गुरु के साथ तृतीय भाव में समान अंशों पर

उदाहरण-11: 27-01-1980/19:01/मेरठ

जन्मकुंडली **नवांश**

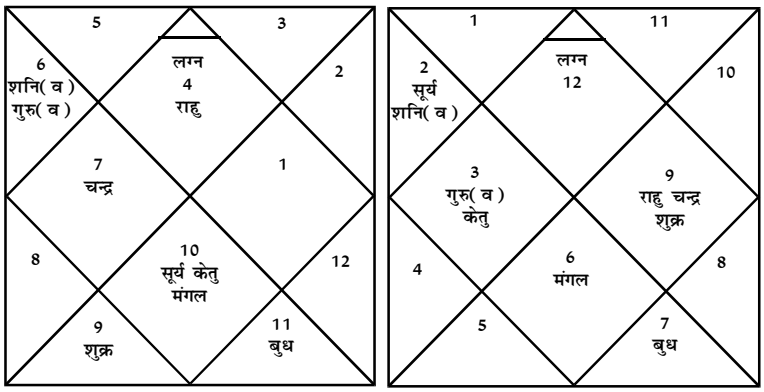

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$29^0\,09'$	$13^0\,56'$	$07^0\,15'$	$28^0\,11'$	$00^0\,52'$	$16^0\,47'$	$26^0\,46'$	$16^0\,07'$	$17^0\,19'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	मंगल	शुक्र	गुरु	शनि	सूर्य	चन्द्र	बुध	

होकर स्थित है। शनि व गुरु, राहु-केतु से निकटतम अंशों पर हैं।

लग्न राश्यांत में है और राहु-केतु अक्ष में भी है। लग्न पर मंगल व सूर्य की दृष्टि है।

नवांश में शुक्र-चन्द्र-राहु एक साथ हैं।

उदाहरण-12 (विवाह में तनाव)

दोनों पति-पत्नी की जन्म कुंडलियों में शनि नीच का होकर सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है।

स्त्री की कुंडली में शनि वक्री है। शुक्र जो लग्नेश होने के साथ विवाह का कारक भी है, मंगल तथा वक्री शनि से पीड़ित है।

ज्ञातिकारक तथाा दाराकारक में 1^0 का अंतर है।

नवांश में शनि की सप्तमेश मंगल से युति विवाह में तनाव को दर्शाती है।

पुरुष की कुंडली में शनि तथा शुक्र समान अंशों पर हैं। सूर्य, नीच का

उदाहरण-12 (पत्नी) 03-12-1970/03:30/दिल्ली

जन्मकुंडली

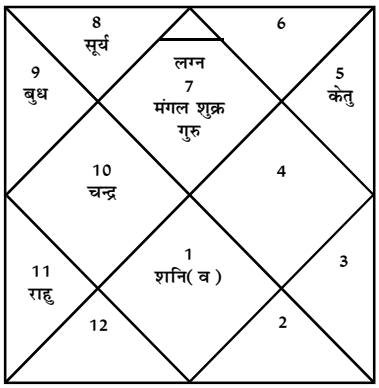

नवांश

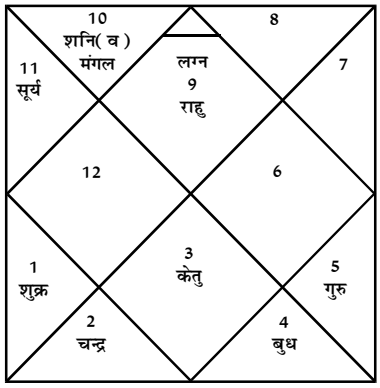

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$01^0\,34'$	$16^0\,52'$	$08^0\,27'$	$04^0\,09'$	$05^0\,51'$	$28^0\,11'$	$16^0\,24'$	$24^0\,02'$	$03^0\,14'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	गुरु	शनि	सूर्य	शुक्र	चन्द्र	बुध	मंगल	

उदाहरण-12 (पति) 01-08-1970/05:42/दिल्ली

जन्मकुंडली

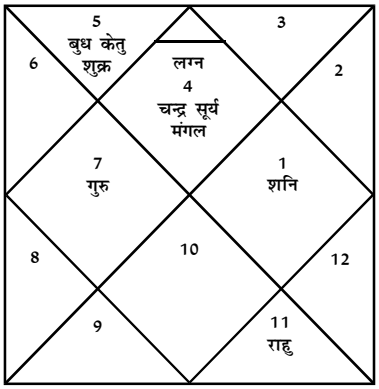

नवांश

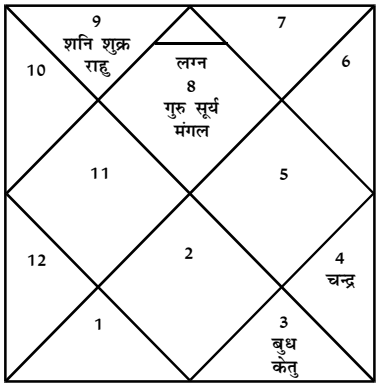

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$14^0\,02'$	$14^0\,53'$	$01^0\,18'$	$15^0\,22'$	$07^0\,44'$	$04^0\,45'$	$28^0\,28'$	$28^0\,07'$	$09^0\,27'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	शुक्र	शनि	मंगल	सूर्य	बुध	गुरु	चन्द्र	

मंगल तथा चन्द्रमा लग्न में स्थित हैं। सूर्य और मंगल लग्न से निकटतम अंशों पर भी हैं।

शुक्र राहु-केतु अक्ष में पीड़ित है।

दोनों के नवांश में शनि कुटुम्ब भाव में हैं जो परिवारिक झगड़े का संकेत देते हैं। स्त्री की कुंडली में मंगल के साथ और पुरुष की कुंडली राहु के साथ होकर पाप प्रभाव में वृद्धि कर रहे हैं।

उदाहरण-13 (विवाह में विलम्ब तथा तनाव)

पुरुष की कुंडली में शनि वक्री होकर चन्द्रमा के साथ छठे भाव में स्थित है।

ज्ञातिकारक और दाराकारक गुरु में अंशात्मक निकटता है।

चन्द्र, मंगल और बुध निकटतम अंशों पर स्थित हैं।

मंगल की सप्तम भाव पर दृष्टि है।

उदाहरण-13 (पति) 27-01-1972/06:00/दिल्ली

जन्मकुंडली

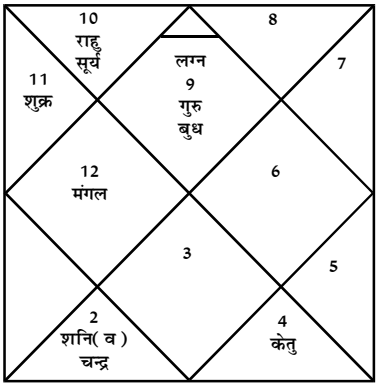

नवांश

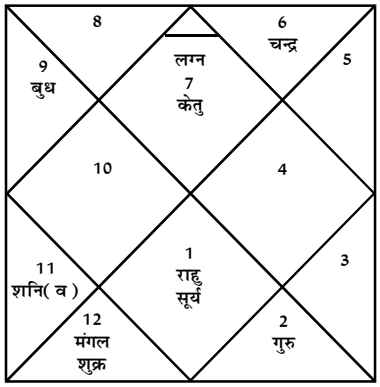

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$22^0\,12'$	$12^0\,41'$	$29^0\,54'$	$26^0\,55'$	$28^0\,43'$	$04^0\,25'$	$19^0\,11'$	$06^0\,07'$	$11^0\,46'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	चन्द्र	बुध	मंगल	शुक्र	सूर्य	शनि	गुरु	

उदाहरण-13 (पत्नी) 11-02-1982/14:18/अमृतसर

जन्मकुंडली **नवांश**

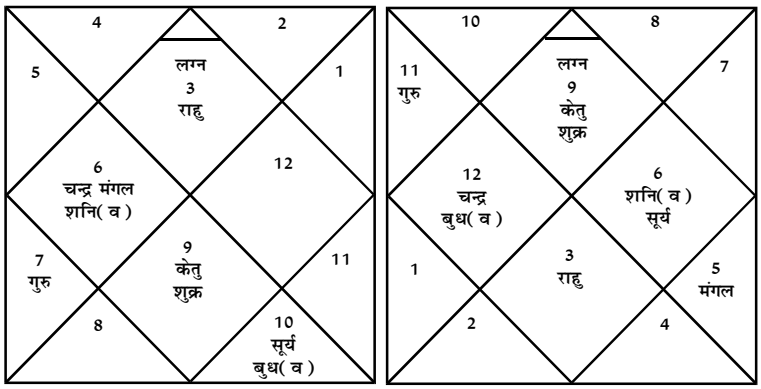

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$09^0\,31'$	$28^0\,41'$	$07^0\,22'$	$25^0\,02'$	$09^0\,32'$	$16^0\,27'$	$29^0\,45'$	$28^0\,32'$	$28^0\,30'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	शुक्र	सूर्य	शनि	मंगल	गुरु	बुध	चन्द्र	

नवांश में, शनि पंचम भाव में स्थित है और वहां से सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। इसी कारण से संतान के जन्म के बाद इनके दांपत्य जीवन में समस्याएं उत्पन्न होने लगीं।

नवांश में ही सप्तम भाव राहु-केतु अक्ष में पीड़ित है।

स्त्री की कुंडली में सप्तम भाव तथा विवाह का कारक शुक्र, दोनों ही राहु-केतु अक्ष में पीड़ित हैं जिसके कारण इनके वैवाहिक जीवन में अवरोध उत्पन्न हुआ।

शुक्र, शनि, सूर्य व मंगल सभी राहु-केतु से अंशात्मक निकटता बनाए हुए हैं।

लग्नेश बुध वक्री होकर अष्टम भाव में स्थित हैं। यह बुध भाव-मध्य पर स्थित हैं।

उदाहरण-14 (विवाह में समस्या)

उदाहरण-14 (पति) 27-03-1979/16:45/दिल्ली

जन्मकुंडली **नवांश**

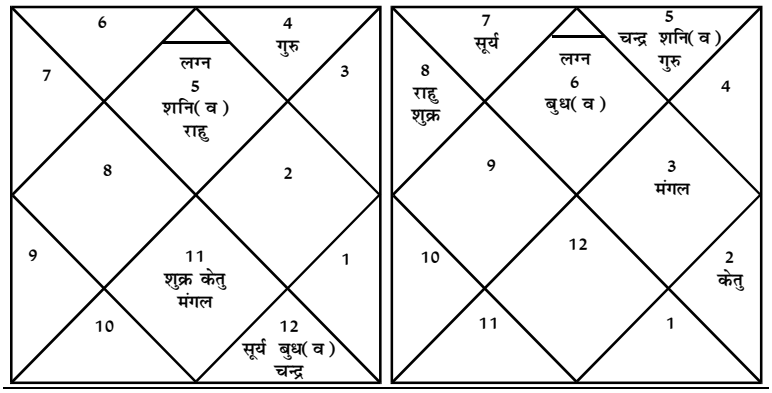

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$19^0\,05'$	$12^0\,37'$	$03^0\,39'$	$28^0\,10'$	$07^0\,14'$	$05^0\,26'$	$04^0\,26'$	$15^0\,02'$	$23^0\,54'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	मंगल	शनि	सूर्य	बुध	गुरु	शुक्र	चन्द्र	

विवाह - जून 2008

जन्मकुंडली में लग्न तथा सप्तम भाव अत्यन्त पीड़ित है।

सप्तमेश शनि वक्री होकर लग्न में स्थित है और राहु-केतु अक्ष में है।

ज्ञातिकारक शुक्र और दाराकारक चन्द्रमा में 1^0 का अंतर है।

द्वितीयेश बुध वक्री होकर अष्टम भाव में चन्द्रमा के साथ है और अस्त भी है।

मंगल तथा शनि में परस्पर दृष्टि संबंध स्थापित है।

नवांश में शनि, चन्द्र तथा गुरु के साथ द्वादश भाव में स्थित है। शुक्र राहु-केतु अक्ष में है।

स्त्री की कुंडली में वक्री शनि तथा मंगल द्वितीय कुटुम्ब भाव में स्थित हैं।

शनि सप्तमेश है।

शनि तथा मंगल दोनों द्वादशेश चन्द्रमा के नक्षत्र में हैं।

शुक्र तथा चन्द्रमा पर अष्टमेश वक्री गुरु की दृष्टि है।

उदाहरण-14 (पत्नी) 18-06-1982/10:20/कानपुर

जन्मकुंडली **नवांश**

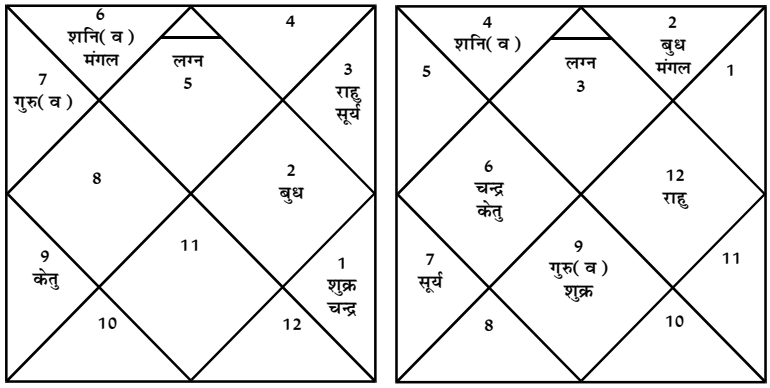

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$08^0\,44'$	$03^0\,01'$	$16^0\,57'$	$14^0\,14'$	$13^0\,41'$	$06^0\,58'$	$27^0\,46'$	$21^0\,53'$	$19^0\,48'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	सूर्य	

नवांश में, गुरु सप्तमेश होकर स्वराशिस्थ हैं लेकिन द्वादशेश शुक्र के साथ 1/7 अक्ष को प्रभावित कर रहे हैं। शनि अष्टमेश होकर द्वितीय कुटुम्ब भाव में है और राशीश चन्द्रमा राहु-केतु अक्ष में पीड़ित है।

जन्मकुंडली का लग्नेश सूर्य नवांश में नीच का होकर द्वादशेश शुक्र की राशि में पंचमस्थ है।

उदाहरण-15 (विवाह में समस्या)

विवाह - 30 अप्रैल, 1993

एक गंभीर दुर्घटना के बाद पुरुष वैवाहिक जीवन जीने में असमर्थ हो गए।

शनि, सूर्य तथा मंगल एकसाथ पंचम भाव में स्थित हैं। शनि की सप्तम भाव तथा सप्तमेश गुरु, दोनों पर दृष्टि है।

ज्ञातिकारक सूर्य और दाराकारक चन्द्रमा समान अंशों पर स्थित हैं।

शुक्र छठे भाव में शनि की राशि में है।

लग्नेश बुध राहु-केतु अक्ष में समान अंशों पर होकर पाप प्रभाव में है।

उदाहरण-15 (पति) 26-01-1964/22:30/दिल्ली

जन्मकुंडली

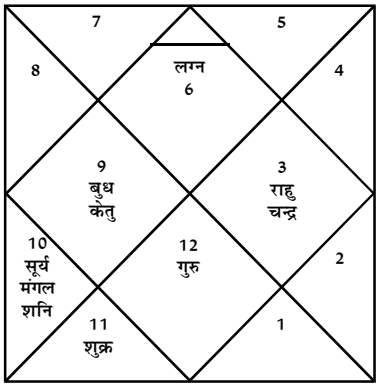

नवांश

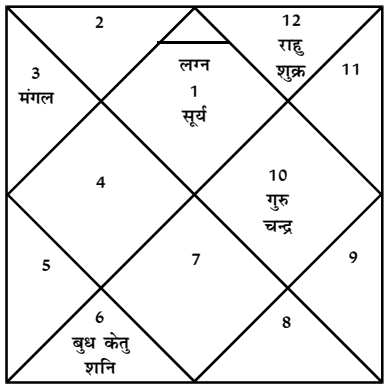

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$13^0\,01'$	$12^0\,25'$	$12^0\,10'$	$17^0\,12'$	$17^0\,43'$	$20^0\,33'$	$18^0\,21'$	$29^0\,53'$	$17^0\,46'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	शनि	गुरु	शुक्र	बुध	मंगल	सूर्य	चन्द्र	

उदाहरण-15 (पत्नी) 11-11-1975/08:30/दिल्ली

जन्मकुंडली

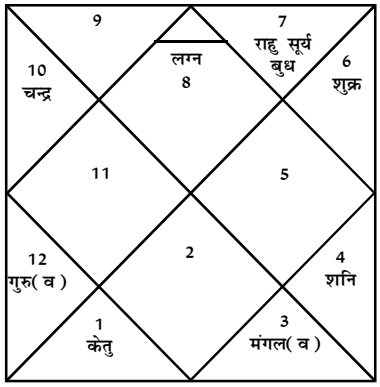

नवांश

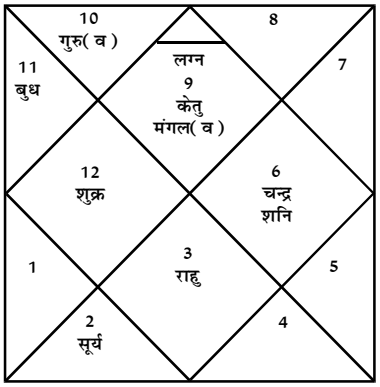

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$17^0\,08'$	$24^0\,34'$	$28^0\,35'$	$08^0\,59'$	$14^0\,07'$	$22^0\,40'$	$08^0\,03'$	$09^0\,26'$	$28^0\,17'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	चन्द्र	सूर्य	गुरु	बुध	शनि	मंगल	शुक्र	

नवांश में शुक्र और बुध 6/12 अक्ष पर राहु-केतु परिधि में हैं।

स्त्री की कुंडली में सप्तमेश और विवाह का कारक शुक्र एकादश भाव में नीच का है तथा शनि से दृष्ट है। शुक्र पर अष्टमस्थ षष्ठेश वक्री मंगल की दृष्टि है।

नवांश में शुक्र, शनि-मंगल से दृष्ट है।

ज्ञातिकारक मंगल तथा दाराकारक शुक्र समान अंशों पर स्थित हैं।

उदाहरण-16 (अविवाहित)

जातक का रिश्ता एक बार टूट चुका है।

वक्री शनि और लग्न समान अंशों पर स्थित है। शनि की दशमस्थ चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टि है। शुक्र पापकर्तरी में है।

ज्ञातिकारक शुक्र और दाराकारक सूर्य की छठे भाव में समान अंशों पर युति है।

पुरुष (उदा.16) 25-11-1974/20:30/दिल्ली

जन्मकुंडली

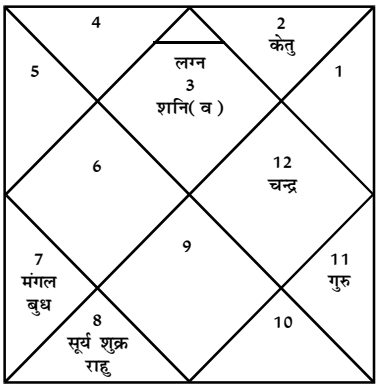

नवांश

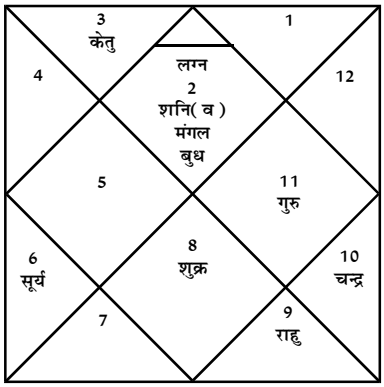

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$24^0\,19'$	$09^0\,27'$	$20^0\,28'$	$25^0\,49'$	$26^0\,10'$	$15^0\,17'$	$14^0\,11'$	$24^0\,49'$	$16^0\,47'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	बुध	मंगल	शनि	चन्द्र	गुरु	शुक्र	सूर्य	

नवांश में, शुक्र और वक्री शनि का दृष्टि संबंध बना हुआ है। लग्न भी पापकर्तरी में है।

जन्मकुंडली में सप्तमेश गुरु की नवम भाव से शनि तथा लग्न पर दृष्टि देर से विवाह दे सकती है।

उदाहरण-17 (विलम्ब से विवाह)

विवाह-20 जुलाई, 1980

पुत्र जन्म-11 अगस्त, 1982

जातक का विवाह देर से हुआ। लेकिन वर्तमान में यह सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

विवाह का कारक शुक्र नीच का होकर मंगल तथा शनि के साथ तृतीय भाव में पीड़ित है जिसने विवाह में विलम्ब दिया। लेकिन नवम भाव से गुरु(व) की दृष्टि है। शुक्र के साथ सप्तमेश की युति है।

पुरुष (उदा.17) 18-11-1951/22:27/दिल्ली

जन्मकुंडली

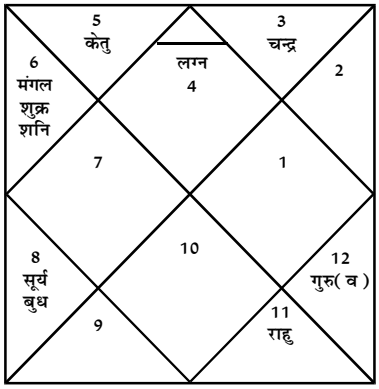

नवांश

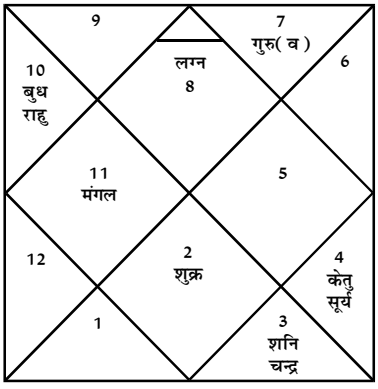

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$13^0\,26'$	$02^0\,21'$	$28^0\,19'$	$03^0\,36'$	$21^0\,48'$	$11^0\,17'$	$15^0\,47'$	$18^0\,06'$	$12^0\,47'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	चन्द्र	बुध	शनि	शुक्र	गुरु	मंगल	सूर्य	

नवांश में शुक्र सप्तमेश होकर स्वराशिस्थ हैं और लग्न को भी देखते हैं।

उदाहरण-18 (विलम्ब से विवाह)

विवाह-09 जुलाई, 2000

जातक का विवाह थोड़ा विलम्ब से परंतु सुखी जीवन है।

ज्ञातिकारक शनि और दाराकारक सूर्य 1^0 अंतर पर हैं।

शुक्र नीच का होकर लग्नस्थ है और वहां से सप्तम भाव को दृष्टि दे रहा है।

चन्द्रमा, शनि और केतु के साथ दशम भाव में स्थित है।

वक्री गुरु की पंचम भाव से लग्न तथा शुक्र पर दृष्टि है।

नवांश में भी शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि है। चन्द्र और मंगल 5/11 अक्ष पर राहु-केतु परिधि में हैं।

पुरुष (उदा.18) 24-08-1973/08:25/दिल्ली

जन्मकुंडली

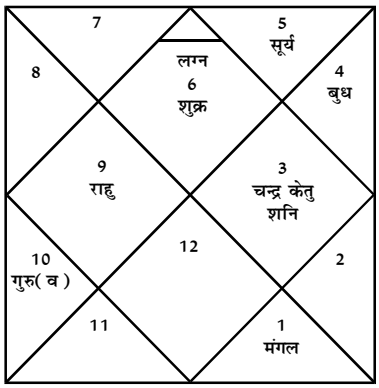

नवांश

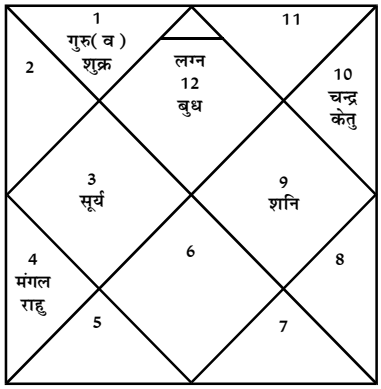

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$09^0\,20'$	$07^0\,18'$	$12^0\,59'$	$10^0\,57'$	$27^0\,34'$	$10^0\,44'$	$12^0\,33'$	$08^0\,43'$	$12^0\,50'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	बुध	चन्द्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	सूर्य	

उदाहरण-19 (विवाह में तनाव)

विवाह-04 अक्तूबर, 2009

पुरुष - जातक का विवाह 29 वर्ष की आयु में हुआ था।

पुरुष की जन्मकुंडली में ज्ञातिकारक सूर्य और दाराकारक चन्द्रमा समान अंशों पर स्थित हैं।

ज्ञातिकारक सूर्य के साथ शनि 1^0 के अंतर पर दशमस्थ हैं।

सप्तमेश बुध ज्ञातिकारक सूर्य के साथ है।

विवाह का कारक शुक्र अष्टम भाव में राहु-केतु अक्ष में पीड़ित है।

स्त्री - जन्मकुंडली को देखें तो शुक्र विवाह का कारक होने के साथ सप्तमेश भी है।

शुक्र छठे भाव में नीच का है और राहु-केतु परिधि में है।

शुक्र और लग्नेश मंगल में अंशात्मक निकटता है।

ज्ञातिकारक सूर्य और दाराकारक चन्द्रमा में अंशात्मक निकटता है।

उदाहरण-19 (पति) 22-09-1980/13:37/पटियाला

जन्मकुंडली

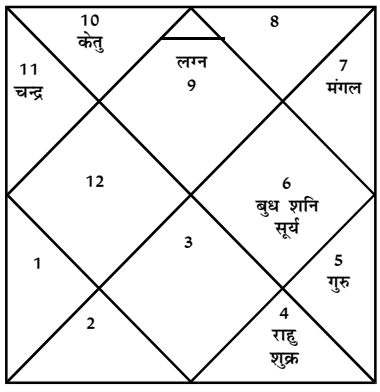

नवांश

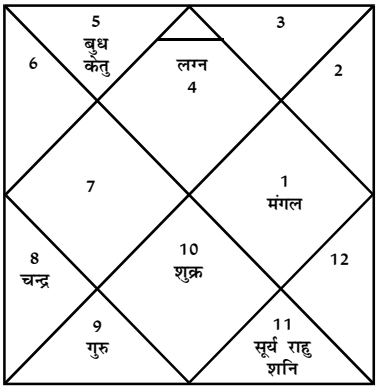

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$10^0\,52'$	$05^0\,53'$	$05^0\,36'$	$22^0\,29'$	$25^0\,39'$	$29^0\,06'$	$22^0\,09'$	$06^0\,31'$	$26^0\,05'$
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	गुरु	बुध	मंगल	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	

उदाहरण-19 (पत्नी) 19-08-1986/22:48/दिल्ली

जन्मकुंडली

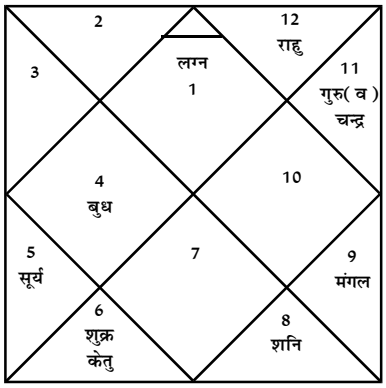

नवांश

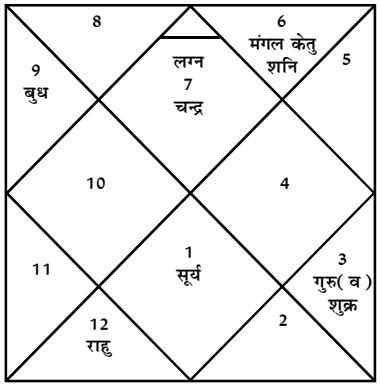

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
22° 44'	02° 45'	01° 52'	18° 07'	16° 47'	26° 57'	18° 37'	09° 31'	28° 39'
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	गुरु	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	सूर्य	चन्द्र	

महिला (उदा.20) 06-04-1979/06:00/दिल्ली

जन्मकुंडली

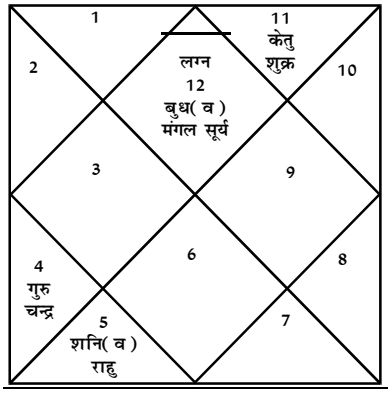

नवांश

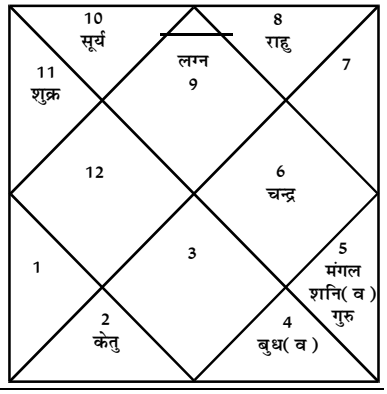

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
19° 51'	22° 03'	09° 39'	05° 38'	02° 13'	05° 37'	15° 50'	14° 27'	23° 37'
कारक	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा	
	सूर्य	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरु	बुध	

उदाहरण-20 (अविवाहित)

जन्मकुंडली में लग्नेश गुरु और मंगल समान अंशों पर स्थित हैं।

लग्न मंगल, सूर्य तथा वक्रीय बुध से घिरा हुआ है।

विवाह का कारक शुक्र 6/12 अक्ष में राहु-केतु परिधि में है तथा वक्री शनि से दृष्ट है।

शनि तथा शुक्र में 1^0 का अंतर है।

ज्ञातिकारक गुरु तथा दाराकारक बुध में भी अंशात्मक निकटता है।

सप्तमेश बुध वक्री तथा नीच का होकर लग्नस्थ है।

नवांश में सप्तमेश बुध अष्टमस्थ है।

जन्मकुंडली तथा नवांश दोनों का सप्तमेश बुध है और पाप प्रभाव में है।

फलदीपिका के अनुसार यदि चन्द्रमा तथा शुक्र पापी ग्रहों के प्रभाव में हो तो विवाह देर से होता है।

*****